International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जनजातीय में शासकीय योजनाओं की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिला के विशेष संदर्भ में

राजेश कुमार मारकण्डेय

समाजशास्त्र विभाग चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेंरठ (उ.प्र.)

सारांश

जनजातियों के विकास के लिए योजनाएँ तभी प्रभावशील होगी जब जनजातियों की मूल संस्कृति की उपेक्षा किए बिना उनके विकास के प्रयास किये जाने चाहिए । विकास का मॉडल उनके परम्परागत जीवन मूल्यों के प्रति विश्वास के आधार पर ही बनाया जा सकता है । उनकी संस्कृति व जीवन शैली को उपहास का पात्र बनाकर अपमानित नही किया जा सकता । जनजातियों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ उनके जीवन के समग्र तथा सर्वांगीण विकास के लिए होनी चाहिए । जनजातीय विकास को दृष्टि में रखकर उनके जीवन शैली को उन्नत बनाना इसका मूल उद्देश्य है ।

की वर्ड :– संस्कृति, विकास, परम्परागत, विश्वास

प्रस्तावना :– सामाजिक परिवर्तन के कारको में संस्कृति की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। जन्म से मनुष्य पशु होता है । संस्कृति वह सशक्त साधन है जो संस्कार के द्वारा व्यक्ति को समाजीकृत प्राणी में परिवर्तित करती है यह संस्कृति समाज को भी प्रभावित करती है । जनजातीय समुदाय विविध नृजातीय , धार्मिक एवं भाषाई समूहो का प्रतिनिधित्व करते है । उनके विकास के स्तर में कोई एकरूपता नही है । संस्कृति का अर्थ वह क्रिया है, जिससे वस्तु के मल (दोष) होकर वह शुध्द सिद्वि साधक बनती है। अतः संस्कृति का अर्थ वह शिक्षा दीक्षा है जिससे मनुष्य का जीवन सुधरे । पुरातन अभ्यासों और आदतों को भी संस्कार कहतें है । यथा जन्म – जन्मांतर के संस्कार। अतः किसी देश या जाति के संस्कृत का अर्थ उस देश या जाति की वे पुरानी आदते, प्रथाएँ रहन सहन आदि है जो उस देश या जाति के मनुष्यों का चरित्र निर्माण करती है या उस निर्माण में प्रभावशाली होते है ।

अध्ययन के उद्देश्य :– जनजातियों की सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्तर को ज्ञात करना ।

अध्ययन के क्षेत्र :– शोध हेतु जिला बालोद के डौण्डी वि.ख. का चयन किया गया है वर्तमान में डौण्डी वि.ख. से प्राप्त सूचना के आधार पर डौण्डी को दो भागों में विभक्त किया गया है । डौण्डी भाग एक, दो । उद्देश्य के आधार पर जनजातीय को देखतें भाग एक का चयन किया गया है भाग एक में कुल जनसंख्या 10486 है । जिसमें डौण्डी ब्लाक में अनु.जनजातियों की कुल जनसंख्या 5993 है । इनमें पुरूष जनजाति की संख्या 2890 है और महिला की संख्या 3103 है जिसमें से महिला लाभान्वितों की संख्या 1500 है इनमें से 20% अर्थात 300 महिला उत्तरदाताओं का चयन दैव निर्देशन पद्वति से किया गया है ।

प्रविधि एवं उपकरण :– प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है । प्रविधि के रूप में अवलोकन का प्रयोग किया गया है ।

तालिका क्रमांक 2.1

उत्तरदाताओं के उत्सव मनाने की स्वतंत्रता

क्र	उत्तरदाताओं के उत्सव मनाने की स्वतंत्रता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	300	100
2.	नही	0	0
		300	100

तलिका क्रमांक 2.1 में उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार उत्सव मनाने की स्वतंत्रता के बारे में 100 प्रतिशत लोगो ने अपनी सहमति दी ।

तालिका क्रमांक 2.2
उत्तरदाताओं के सभ्यता एवं संस्कृति के संबंध में अभिरूचि

क्र	उत्तरदाताओं के सभ्यता एवं संस्कृति के संबंध में अभिरूचि	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	भारतीय	185	61.66
2.	पाश्चात्य	62	20.67
	मिश्रित	53	17.67
	योग	300	100

उपर्युक्त तालिका क्रमाँक 2.2 से ज्ञात हेाता है कि यद्यपि भारतीय संस्कृति की आड़ में अनुसूचित जनजातियों पर अनेकानेक अत्याचार एवं अमानवीय कृत्य होते रहे, परंतु व्यक्ति को अपनी संस्कृति में विशेष लगाव होता है, इसलिए अत्याचार सहने के बाद भी अधिकांश 61.66% उत्तरदाताओं ने भारतीय संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ संस्कृति के रूप मे स्वीकार किया है। 20.67% उत्तरदाताओ ने भारतीय संस्कृति की तुलना पाश्चात्य संस्कृति को श्रेष्ठ माना है। जबकि 17.67% उत्तरदाताओ ने पाश्चात्य वेशभूषा की उच्चता को स्वीकार करते तथा भारतीय को फैशन से अनुकूलन करने के लिए भी अपनाते है। अतः पाश्चात्य वेशभुषा और भारतीय संस्कृति को अपने जीवन में समय के अनुरूप अपनाने की कोशिश करते है।

तालिका क्रमांक 2.3
उत्तरदाताओं के त्यौहार मनाने मे परिवर्तन

क्र.	त्यौहार मनाने में परिर्वतन	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	247	82.33
2	नही	53	17.64
	कुल	300	100

तलिका क्र 2.3 में जनजातियों के त्योहारों का अध्ययन किया गया है । जिसमें यह पाया गया है कि 82.33 उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अपने त्योहारों को मनाने में परिवर्तन लाए है । समय के अनुसार वे भी अपने में परिवर्तन किए है । और वे आधुनिक समय के अनुरूप कार्य करते है वे आदिवासी जिन्होने आज भी अपने पुराने रीतिरिवाजों के अनुसार अपने त्योहारों को मनाते है । अभी भी प्राचीन जीवन शैली से जुड़े हुए है । केवल 17.64 उत्तरदाता है ।

तालिका क्रमांक 2.4
उत्तरदाताओं का जादूटोना में विश्वास

क्र.	जादूटोना में विश्वास	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	225	75
2	नही	75	25
	कुल	300	100

उपर्युक्त तालिका कमाक 2.4 से स्पष्ट होता है कि जादूटोना पर विश्वास करने वाले 75 प्रतिशत है साथ ही जादू टोना में विश्वास नही करनें वाले उत्तरदाता 25 प्रतिशत है ।

तालिका क्रमांक 2.5
उत्तरदाताओं के घर बली प्रथा

क्र.	बली प्रथा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	300	100
2	नही	00	00
	कुल	300	100

उपर्युक्त तालिका कमाक 2.4 से स्पष्ट होता है कि यहां बलि प्रथा एक परम्परा है जिसमें वे पशु या फल की बलि चढ़ातें है जो कि शतप्रतिशत है ।

निष्कर्ष :– जनजातियो की सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति को ज्ञात करने से स्पष्ट हुआ कि अभी भी जनजातियॉ सांस्कृतिक और धर्म पर विश्वास करते है जिससे पता चलता है कि उत्तरदाताओं को उत्सव मनाने की स्वतंत्रता है लेकिन वो सभ्यता एवं संस्कृति को फैशन के तौर पर अपना रहे है । धार्मिक विश्वास आज भी परिवर्तनशील नही है । क्योकि बलि प्रथा परम्परागत प्रथा के रूप में अभी भी प्रचलित है ।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. कालिया एस.एल 1959 संस्कृताइजेशन एंड ट्राइबलाइजेशन , बुलेटिन आफ ट्राइबल रिसर्च इंस्ट्यूट , छिंदवाड़ा
2. सच्चिदानंद 1964 कल्चर चेंज इन ट्राइबिहार बुकलेट (प्रा.) लि. : कलकत्ता
3. सहाय के. एन. 1962 ट्रेडस ऑफ संस्कृताइजेशन अमंग द उराव बुलेटिन ऑफ बिहार ट्राइबल इंस्ट्यूट 4(2)
4. श्रीनिवास एम.एन. 1966 सोशल चेंज इन द ट्राइबल ऑफ मार्डन इंडिया यनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस : बर्कले एंड लास ऐंजिलस
5. विद्यार्थी एल.पी. 1968 कल्चरल चेंज इन द ट्राइबल ऑफ मार्डन इंडिया , अध्यक्ष का अभिभाषण पचपनवी भारतीय विज्ञान कांग्रेस : वाराणसी
6. राय.बी. के 1976 द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया कंसेप्ट पब्लिशिंग हाउस : नईदिल्ली